ज़िन्दगी गुजारने के दो रास्ते

हजरत मौलाना जुल्फीकार नक्शबंदी दब.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे
भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

इन्सान इस दुनिया में दो तरह से ज़िन्दगी गुज़ार सकता है एक मन चाही ज़िन्दगी दूसरे रब चाही जिन्दगी. अब हमने इन दोनों बातों को देखना हैं कि इन दोनों में से बेहतर रास्ता कौन सा है. एक है अपनी मर्जी से जिन्दगी गुज़ारना दूसरा है अल्लाह तआला की मर्जी से जिन्दगी गुज़ारना. इन्सान जब अपनी मर्जी की ज़िन्दगी गुज़ारता है तो गोया अपनी सोच के मुताबिक जिन्दगी गुज़ारता है. इन्सान की सोच के कुछ रास्ते हैं. मसलन इन्सान आंख से देखता है, कान से सुनता है, जबान से बोलता है. इन आज़ा के साथ इन्सान गोया मालूमात इकट्ठी करता है या दूसरे लफ्जों में इल्म हासिल करता है. फिर इस इल्म पर इन्सान अपनी जिन्दगी की बुनियाद उठता है.

जिस तरह इन्सान देखना, बोलना, सुनना, सूंघना और छूना के इल्म से कमज़ोर है इसी तरह इसके तज़रूबे भी बहोत कमज़ोर है, अपने तज़रूबे को बुनियाद बनाने के बजाये अल्लाह के हुक्मो को

बुन्याद बनायेगा तो इन्सान यकीनन कामयाब होगा. एक इन्जीनियर किसी मशीन को बनाता है तो वो अच्छी तरह जानता है के मशीन किस तरह काम करेगी, जब मशीन कही भेजता है तो मशीन के साथ एक इन्जीनियर और मेन्युअल भी भेजते है, अगर इस मिसाल को जहेन मे रखे तो ज़िन्दगी की हकीकत को समझना आसान हो जाता है.

अल्लाह ने इन्सान को मशीन बनाया और नबियो को भेजा और सब से आखिर मे हुजूरﷺ तशरीफ लाये, आपﷺ तमाम इन्सानो के इन्जीनियर बनकर आये और आप पर कुरान यानि इन्सानो की ज़िन्दगी के लिये हिदायत की किताब नाज़ील हुवी.

आपﷺ उस्के मुताबिक ज़िन्दगी गुजारी और सहाबा (रदी) से कहा ए लोगो जिस तरह मे ज़िन्दगी गुज़ार रहा हु अगर तुम इस तरह ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो कामयाब हो जावोगे और फरमाया के मे अपने पीछे ये हिदायत की किताब कुरान छोड कर जा रहा हु, तुम इस के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो कामयाब हो जावोगे.

अब अपने तज़रूबे और अपनी देखी हुवी चीझो के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारनी है या अपने खालिक के हुक्मो का मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारनी है? फैसला आप का.

हवाला- उर्दु किताब "खुत्बाते फकीरी/१"
से इस्का लिप्यांतरण किया गया हे.